

## चामुण्डा देवी की चालीसा

॥ दोहा ॥

नीलवरण मा कालिका रहती सदा प्रचंड ।  
दस हाथो मई ससत्रा धार देती दुस्त को दांड ।।

मधु केटभ संहार कर करी धर्म की जीत ।  
मेरी भी बड़ा हरो हो जो कर्म पुनीत ।।

॥ चालीसा ॥

नमस्कार चामुंडा माता ।  
तीनो लोक मई मई विख्याता ।।  
हिमाल्या मई पवितरा धाम है ।

महाशक्ति तुमको प्रडम है ॥1॥

मार्कंडिए ऋषि ने धीयया ।

कैसे प्रगती भेद बताया ॥

सूभ निसुभ दो डेटिए बलसाली ।

तीनो लोक जो कर दिए खाली ॥2॥

वायु अग्नि याँ कुबेर संग ।

सूर्या चंद्रा वरुण हुए तंग ॥

अपमानित चर्नो मई आए ।

गिरिराज हिमआलये को लाए ॥3॥

भद्रा-राँद्रा निट्टया धीयया ।

चेतन शक्ति करके बुलाया ॥

क्रोधित होकर काली आई ।  
जिसने अपनी लीला दिखाई ॥4॥

चंदड़ मूंदड़ ओर सुंभ पतए ।  
कामुक वेरी लड़ने आए ॥  
पहले सुग्गीव दूत को मारा ।  
भगा चंदड़ भी मारा मारा ॥5॥

अरबो सैनिक लेकर आया ।  
द्रहूँ लाकंगन क्रोध दिखाया ॥  
जैसे ही दुस्त ललकारा ।  
हा उ सबद्द गुंजा के मारा ॥6॥

सेना ने मचाई भगदड़ ।

फादा सिंग ने आया जो बाद ॥

हट्टिया करने चंदड़-मूंदड़ आए ।

मदिरा पीकेर के घुरई ॥7॥

चतुरंगी सेना संग लाए ।

उचे उचे सीविएर गिराई ॥

तुमने क्रोधित रूप निकाला ।

प्रगती डाल गले मूंद माला ॥8॥

चर्म की सँडी चीते वाली ।

हड्डी ढाचा था बलसाली ॥

विकराल मुखी आँखे दिखलाई ।

जिसे देख सृस्ति घबराई ॥9॥



चंदड़ मूंदड़ ने चकरा चलाया ।  
ले तलवार हू साबद गूंजाया ॥  
पपियो का कर दिया निस्तरा ।  
चंदड़ मूंदड़ दोनो को मारा ॥10॥

हाथ मई मस्तक ले मुस्काई ।  
पापी सेना फिर घबराई ॥  
सरस्वती मा तुम्हे पुकारा ।  
पड़ा चामुंडा नाम तिहरा ॥11॥

चंदड़ मूंदड़ की मिरतट्यु सुनकर ।  
कालक मौर्या आए रात पर ॥  
अरब खराब युध के पाठ पर ।

झोक दिए सब चामुंडा पर ॥12॥

उगर् चंडिका प्रगती आकर ।  
गीडदीयो की वाडी भरकर ॥  
काली खटवांग घुसो से मारा ।  
ब्रह्मांड ने फेकि जल धारा ॥13॥

माहेश्वरी ने त्रिशूल चलाया ।  
मा वेशदवी कक्करा घुमाया ॥  
कार्तिके के शक्ति आई ।  
नासिंघई दितियो पे छाई ॥14॥

चुन चुन सिंग सभी को खाया ।

हर दानव घायल घबराया ॥

रक्तबीज माया फेलाई ।

शक्ति उसने नई दिखाई ॥15॥

रक्त गिरा जब धरती उपर ।

नया डेटिए प्रगता था वही पर ॥

चाँदी मा अब शूल घुमाया ।

मारा उसको लहू चूसाया ॥16॥

सूभ निसुभ अब डोडे आए ।

सततर सेना भरकर लाए ॥

वाजरपात संग शूल चलाया ।

सभी देवता कुछ घबराई ॥17॥

ललकारा फिर घुसा मारा ।

ले त्रिसूल किया निस्तरा ॥

सूभ निसुभ धरती पर सोए ।

डेतिए सभी देखकर रोए ॥18॥

कहमुंडा मा धर्म बचाया ।

अपना सूभ मंदिर बनवाया ॥

सभी देवता आके मानते ।

हनुमत भेराव चवर दुलते ॥19॥

आसवीं चेट नवराततरे अओ ।

धवजा नारियल भेट चाड़ौ ॥

वांडर नदी सनन करऔ ।

चामुंडा मा तुमको पियौ ॥20॥



॥ दोहा ॥

सरणागत को शक्ति दो हे जाग की आधार ।

‘ओम’ ये नेया दोलती कर दो भाव से पार ॥

